Date 13/04/2020 प्रेक्षणात्मक अधिगम

Observational Learning

व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के व्यवहारों तथा उनके परिणामों का निरीक्षण करके सीखता है। सीखने के इसी रूप को प्रेक्षणात्मक सीखना कहते हैं। जैसे बच्चा अपने परिवार में देखता है कि छोटे अपने से बड़ों का आदर करते हैं तो बच्चा भी अपनों से बड़ों का आदर करता है। बैरोन (Baron 2003) के शब्दों में "प्रेक्षणात्मक अधिगम सीखने का एक रूप है जिसमें प्राणी अपने इर्द-गिर्द के दूसरे प्राणियों के व्यवहारों एवं व्यवहार के परिणामों का निरीक्षण करके सीखते हैं।" बैण्डुरा (Bandura 1977) के अनुसार एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति या व्यक्तियों के व्यवहारों का निरीक्षण करके तथा उसे दुहराकर वैसा ही व्यवहार करना सीख लेता है।

प्रेक्षणात्मक सीखना के मौलिक नियम या सिद्धान्त

Basic Principles of Observational learning

बैण्डुरा (Bandura 1986) के अनुसार प्रेक्षणात्मक अधिगम के निम्नलिखित चार मौलिक नियम हैं।

1. अवधान (Attention):— इसमें यह आवश्यक है कि दूसरे व्यक्ति को व्यवहार करते हुए देखने के पीछे पहला व्यक्ति कितना ध्यान दे रहा है। व्यक्ति वास्तव में ऐसे व्यक्ति (मॉडल) पर ध्यान देता है और उसके व्यवहार का अनुकरण करता है जो

Scanned with CamScanner

उसकी आवश्यकताओं तथा उसके उद्देश्यों से सम्बन्ध होते हैं।

2. धारण (Retention) इस तरह के सीखना के लिए मॉडल पर न केवल ध्यान देना है बल्कि उसे याद भी रखना है तभी व्यक्ति अपने मॉडल के व्यवहारों या क्रियाओं को कल्पना, चित्रण के रूप में अपनी स्मृति में धारण कर सकेगा ताकि उसी के अनुरूप व्यवहार हो सके।

3. उत्पादन प्रक्रियाएँ (Production Process) — ध्यान एवं स्मृति के साथ-2 यह भी आवश्यक है कि स्मृति में संचित व्यवहार को कार्य रूप देने शारीरिक शक्ति व्यक्ति में हो एवं मॉडल व्यवहार समरूप समायोजन संबन्धी होने वाली कठिनाइयों के उपाय भी ज्ञात हो सके

4. अभिप्रेरक (Motivation) उपर्युक्त तीनों कारकों के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति को अभिप्रेरित कितना किया गया है। जब कोई प्रेक्षित व्यवहार हमारे लिए वांछनीय होता है तो हम उसको सीख लेते हैं और जब हम उस व्यवहार को अवांछित समझते हैं तो उसको नहीं दुहराते।

Dr. Eshikant Dhuswal
Assistant Professor
Dept of Psychology
Dr. L.K.V.D College Tajpur
Samastipur.